भारत की शि क्षा नीति और राजभाषा नीति

राहुल खटे,
उप प्रबंधक (राजभाषा),
स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, हुब् बल् ली
मोबाइल: 09483081656
E-Mail: rahulkhate@gmail.com

जैसा कि यह सभी जानते हैं कि भारत 15 अगस् त 1947 को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। सब यही समझते हैं कि हम उसी दि न स् वतंत्र हुए। लेकि न यह एक बहुत बडा भ्रम था। महात् मा गांधी ने अंग्रेजों से सामने बि ना कि सी शर्त के पूर्ण स् वतंत्रता की मांग रखी थी। लेकि न भारत के ही कुछ स् वार्थी लोगों ने अंग्रेजों की राष् ट्र वि रोधी शर्तों को सशर्त स् वीकार कर लि या था, जि समें एक भाषा नीति भी थी। अंग्रेजों को पता था कि यह देश अपनी भाषा के बल पर आगे और भी प्रगति कर सकता है। इसी को रोकने के लि ए अंग्रेजों ने कुछ अंग्रेजी प्रिय भारतीयों के साथ मिलकर भारतीय शि क्षा पद्धति में संस् कृत को स् थान न देने जैसे राष् ट्र वि रोधी शर्तें भी शामि ल की। अब प्रश् न यह उठता हैं कि ऐसी स् थि ति उत् पन् न क् यों हुई? समस् या जि तनी गंभीर होती है, उसके कारण भी बहुत शोधगम् य होते हैं। इसकी शुरूआत भी आजादी के पहले से होती है। मैकाले नामक अंग्रेज के ही वह जहरीले बीज हैं, जो अब फलीभूत हो रहें हैं। दरअसल, अंग्रेजों ने भारत की सामाजि क और आर्थिक स् थि ति का सर्वेक्षण करने के बाद, जो शि क्षा नीति भारत को गुलाम बनाये रखने के लि ए बनायी थी, वही नीति स् वतंत्रता के बाद भी कुछ लोगों द्वारा जारी रखी गई, जि सका परि णाम हैं कि आज हमारी शि क्षा व् यवस् था रोजगार की गारंटी नहीं देती। शि क्षि त होने के बाद भी नैति कता की कोई गारंटी नहीं है तथा स् थि ति तो और भी बदतर तब हो जाती है, जब पढे-लि खे शि क्षा प्राप् त लोगों में इन सभी स् थि ति यों के बारे में उदासि नता पायी जाती है। उनमें न भारतीय संस् कृति के प्रति आदर है और न ही उन् हें इसकी परवाह है।

उच् च शि क्षा प्राप् त आधुनि क पीढ़ी के मन में भारतीय इतिहास के बारे में गौरव की भावना नहीं है, क् योंकि उनके पाठ्यक्रम में हमने वही परोसा ही है, जिसका परि णाम यह हुआ कि वे अपने आप को सर्वश्रेष्ठ भारतीय समझने बजाय अपने आप को कुंठित एवं दब-कुचले महसूस करते हैं। इसका कारण उनका पाठ्यक्रम हैं, जिसमें ज्ञान-विज्ञान का संपूर्ण स्रोत पश्चिमी विद्वान है। उन् हें भारतीय वैज्ञानिकों का नाम भी पता नहीं होता है। उनके लि ए भारत तो केवल जमीन का टुकडा मात्र है। ऐसा हो भी क् यों ना ? अंग्रेजों की खुराफाती दिमाग जाते-जाते भी हमें भेदभाव और अज्ञान का शिक्षा वि रासत में दे गए।

कि सी ने सही कहा हैं कि कोई भी देश अपने भवि ष् य का नि र्माण नहीं

कर सकता, जो अपने अति त को भूल जाता है। पश् चि मी शि क्षा हमें डार्विन का **वि कासवाद** सि खाती है, लेकि न **आत् मा** के अस् ति त् व पर हमें आज भी संदेह है। हमने **ग् लोबलाइलेशन** को तो अपनाया है, लेकि न '**वसुधैव कुटुंबकम्**' का नारा भुल गये हैं। **आर्यभट्ट** नामक उपग्रह हमने अंतरिक्ष में स् थापि त कि या हैं, लेकि न हमारे बच्चों के **पाठ्यक्रम** में **आर्यभट्ट के बारे में** एक भी पाठ नहीं हैं। **सुश्रुत** हॉस्पि टल की नेमप् लेट लगी है, लेकि न **सुश्रुत** महाशय कौन है, हमें नहीं पता। जि स **संस् कृत** की वैज्ञानि कता पर स् वयं **नासा** शोध कर रही है, वह हमारे देश की शि क्षा में हो अथवा न हो, इस पर वि वाद है। ऐसे कई सारे उदाहरण हैं, जो केवल भ्रम के कारण पैदा किये गये है।

अब सवाल उठता है कि इन सब से निजात कैसे पाया जाए ? इसका एक आसान सा उपाय है-शि क्षा नीति में भाषा को उचित सम्मान देना। भारतीय भाषाओं को शि क्षा की प्राय: सभी वि धाओं में गौण माना गया है। विज्ञान की दौड में हम यह भूल गये है कि प्रकृति का भी अपना एक वि ज्ञान है, जि से हमारे मनीषियों/ऋषि यों ने जाना था। प्रकृति को पूजा करने के पीछे इसी प्राकृति क वि ज्ञान को समझना था। भारत के सभी उत् सव/त् योहार प्रकृति के परि वर्तनों से जुड़े है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित सिद्धांतों पर आज भी शोध की आवश् यकता है। इसमें भाषा के अध् ययन की वि शेष भूमि का है। संस् कृत, जि से कुछ लोग मृत मानते है, भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में उसके आज भी शब् द तत् सम/तत् भव और अपभ्रंश रूप में जीवि त है। बायनरी सि स् टम, जि ससे कंप् यूटर की प्रणाली चलती है, उसे हमारे पिंगल ऋषि ने सर्वप्रथम दुनि या के सामने रखा (वि श् वास करना भी कठिन है)। आर्यभट्ट के गणि त सिद्धांत आज भी गणि त वि षय का भूषण बने हुए है। डार्विन के वि कासवाद को यदि पूर्वजन् म और पुनर्जन्म के सिद्धांत के साथ जोडकर देखा जाए, तो पुनर्जन्म के सि द्धांत में भी वि कासवाद की छाप दिखाई देती है। 84 लाख योनि यों के बाद मनुष् य जन् म की प्राप् ति का सि द्धांत इसी वि कासवाद की ओर इशारा करता है। अपने पूर्वजों को बंदर मानने से बेहतर है कि हम ऋषि यों को हमारा पूर्वज माने, गोत्र प्रणाली हमारे पूर्वजों के नामों की तरफ ही इशारा करती है कि हम उस ऋषि के कुल में उत् पन् न हुए है। दशावतारों की कहानी भी मनुष् य की उत् पत् ति से लेकर वि कासवाद की कडि यां ही लगती हैं। मच् छ, कच् छ, वराह, नृसिंह, परशुराम, वामन, राम तथा कृष्ण/बलराम का स् वरूप जीव सृष्टि के उत् पत्ति से लेकर आज तक के वि कसि त मानव का ही तो वर्णन है। केवल अलंकारि कता और चमत् कारों को थोडा अलग रखें, तो अवतारों का क्रम मनुष् य वि कास की अवस् थाओं की तरफ संकेत करता है। भारतीय आयुर्वेद और योग की महि मा से आधुनि क वि श् व भी परि चि त हो रहा है। मच् छ अवतार जल से जीवन के प्रारंभ होने के वैज्ञानि क तथ् य की तरफ इशारा करती है, कच् छ अवतार उभयचर जीव जो पूर्णत: जलचर से वि कास होकर उभयचर बनने की तरफ संकेत देता है, वराह अवतार पूर्णत: जमीन पर जीने वाले जीवों के वि कास की ही कहानी है, नृसिंह प्राणि सदृश मनुष् य के विकास का ही एक चरण है, वामन रूप छोटे बच् चे के रूप में वि कास का ही एक रूप है, परशुराम आक्रामकता और युद्धों

को दि खाता है जबकि उसके बाद का पुरूषोत्तम राम का रूप पूर्ण मानव का प्रतीक है, जो न केवल पूर्ण शारि रि क रूप से बल्कि बौद्धि क रूप से भी मनुष् य के वि कास को इंगि त करता है। कृष्णावतार पशुपालक (गोपालक) मनुष् य का रूप है और उनके भाई बलराम के कंधों पर दि खाई देने वाला हल कृषि व् यवस्था का ही प्रतीक है। यह क्रम मनुष् य के वि कास के ही वि वि ध चरण हैं। जि से अलंकारि कता और अति शयोक् ति युक् त वर्णन ने काल् पनि क बना दि या, जो कि वास् तवि क ही है।

दरअसल, पाश् चात् य वि द्वानों के भारतीय साहि त् य में घुसपैठ और उनके गहन तथा आलंकारि क अर्थ को न समझने के कारण भ्रम की स् थि ति उत् पन् न हुई है।

अंग्रेजों के आगमन और उनका भारतीय सामाजि क व् यवस् था अत् याधिक हस् तक्षेप के कारण भारत की सामाजि क और अर्थव् यवस् था के साथ साथ देश की शि क्षा व् यवस् था को जो क्षति पहुंची है, उसको दूर करने के लि ए शि क्षा व् यवस् था में ऐसे परि वर्तनों की आवश् यकता महसूस हो रही है, जि से ध् यान मे रखकर नई शि क्षा नीति की पहल हो रही है।

150 वर्षों की गुलामी और उसके बाद अपनाई गई शि क्षा व् यवस् था के ही यह सब परि णाम है। लूट की भावना से आये अंग्रेजों के आगमन और जाते-जाते फूट की भावना का बीजारोपण और उससे फलीभूत मानसि कता का असर ही तो हम देख रहे हैं। इन सब में अंग्रेजी माध् यम का जलसिंचन ने व् यवस् था के वटवृक्ष को इतना घनीभूत कर दि या है कि अब ऐसा लगने लगा है कि ***'अब न होगा इस नि शा का फिर सवेरा।'*** *किंतु 'प्राचि की मुस् कान फिर-फिर भी तो है। स् नेह का आव् हान फिर-फिर और नीड का नि र्माण फिर-फिर भी तो है, जि से* हमें ही करना होगा।

इस स् थि ति से उबरने में थोडा और समय लगेगा। समाज के सभी स् तरों में इस वि षय के प्रति जागरूकता की आवश् यकता है, वि शेष रूप से शि क्षा व् यवस् था में।

प्राय: देखा जाता है कि सरकारी नौकरी में आने के बाद कर्मचारि यों को हमारी राजभाषा हिंदी सि खाने के प्रयास होते है, जो कुछ हद तक कामयाब भी हैं, लेकि न एक बार घडा पकने के बाद उसे आकार देना व् यर्थ होता है। हमारी पूरी शि क्षा व् यवस् था पहले अंग्रेजीयत का पाठ पढाती है और बाद में हम उन् हे हिंदी का पाठ पढाते है। इसका एक आसान सा उपाय यह है कि शि क्षा व्यवस् था में एक ऐसी व् यवस् था हो, जो सभी समस्याओं का समाधान कर पाए। हिंदी माध् यम से शि क्षा ही इसका असरदार उपाय दि खाई देता हैं। इससे दोहरा फायदा होने की संभावना है। एक तो पाठ्यक्रमों को यदि हिंदी में उपलब् ध कराया गया, तो शि क्षा, वैद्यक, कृषि , वाणि ज् य, कंप् यूटर, वि धि , तकनीकी आदि वि षय, जो काफी जटिल माने जाते है, आसानी से

समझ मे आ सकते है, वही दूसरी तरफ इन् हें हिंदी माध् यम से पढाने के कारण इसमें लगने वाले समय में भी बचत हो सकती है। जैसे-जि स पाठ्यक्रम को चार या छ: वर्ष लगतें है उसे दो या चार वर्षों में ही पूरा कि या जा सकता है। साथ ही अंग्रेजी को समझने के लगने वाली माथापच् ची से भी नि जाद मि ल जाएगी। केवल देश में कार्य करने और वि देश में कार्य करने की इच् छा रखने वाले इस प्रकार का वर्गीकरण कि या जाए, तो वे वि द्यार्थी जो वि देशों में अथवा अंग्रेजी में शि क्षा प्राप् त नहीं करना चाहते हैं, उन् हें अंग्रेजी के बोझ से बचाया जा सकता है। जो वि द्यार्थी केवल अच् छे अवसरों के लि ए वि देशों में जाते हैं, ऐसे 1 से 5 प्रति शत बच् चों के लि ए उन 95 से 99 प्रति शत वि द्यार्थी के सि र से अंग्रेजी के भूत का बोझ भी दूर कि या सकता है। हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्रों के कुछ मेधावी वि द्यार्थी तो केवल इसलि ए पढाई छोड देते है, क्योंकि वे अंग्रेजी से तंग आ गये होते है। वि षय में उनकी रूचि   तो होती है, लेकि न केवल आकलन न होने के कारण कई बच्चों के पढाई छोडने के मामले सामने आते हैं। भारत जैसे कृषि   प्रधान देश में यदि   कृषि   शास् त्र की पढाई हिंदी में उपलब् ध हो, तो उसका फायदा लाखों कि सानों के बच् चों को होगा। दूसरा उपाय यह भी है-कार्यालयीन हिंदी अथवा प्रयोजनमूलक हिंदी को अनि वार्य कि या जाना चाहि ए, जि ससे वि द्यार्थी विद्यालय और महावि द्यालयीन स् तर पर ही भारत की भाषा नीति   से परि चि त हो जाए। उन् हें हिंदी में सरकारी कामकाज में प्रयोग में आनेवाली शब्दावली, वाक् यांश, नोटिंग-ड्राफ्टिंग, कंप् यूटर पर हिंदी में प्रारूप लि खने, ई-मेल भेजना, सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग आदि का अभ् यास करवाया गया, तो इससे सरकारी नौकरी प्राप् त करते ही हिंदी में कार्य करने में आसानी होगी। इस पर शि क्षा वि भाग को भी वि चार करना चाहि ए।

इन सभी बातों पर गौर करें तो राजभाषा नीति   के कार्यान् वयन की आवश् यकता सरकारी कार्यालयों के स् थान पर भारत की शि क्षा व् यवस् था में होना परमावश् यक है, क्योंकि शि क्षा नीति   ही वह स् थान है जहां देश के अन् य नीति यों की नीव होती है।

जि स प्रकार कि सी बडी इमारत की नीव से ही उसकी मजबूती तय होती है, उसी प्रकार देश की व् यवस् था की नीव उसकी शि क्षा व् यवस् था ही है। उसे यदि   *निज* अर्थात हमारी स् वयं की भाषा में प्रदान कि या गया तो नि श् चि त ही सभी क्षेत्रों की उन् नति   नि श् चि त है। इसीलि ए भारतेंदु हरि श् चंद्र ने कहा है :

" निज भाषा उन् नति   अहै, सब उन् नत् ति   को मूल।।
बिन निज भाषा ज्ञान के मि टत न हि य के शूल ।।"

---000---

(राहुल खटे द्वारा लि खा गया मौलि क लेख)